Patrika (Indore), 16th May 2024, Page - 01

उपलब्धि : आइआइटी इंदौर ने ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर से तैयार की

सेमी कंडक्टर स्टार्टअप्स में आएगा बूम, अब बिना खर्च बनेगी चिप

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. आइआइटी इंदौर ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है, जिससे प्रदेश में सेमी कंडक्टर स्टार्टअप्स में बूम आएगा। संस्थान ने ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर से दो चिप तैयार की हैं। इसे ईफेबलेस ओपन मल्टी प्रोजेक्ट वेफर कंपनी ने फेब्रिकेट करने के लिए चुना है। कंपनी के पास दुनियाभर से 144 चिप पहुंची हैं। 83 भारत से थीं। आइआइटी इंदौर ने चार चिप भेजी थी, जिसमें से दो फेब्रिकेशन के लिए चुनी गई हैं।

रिसर्च करने वाली नेहा माहेश्वरी ने हार्डवेयर सिक्योरिटी चिप डिजाइन की है। ये चिप साइबर खतरों से बचाने में मदद करेगी। अब तक सिस्टम को सुरक्षित करने के लिए सॉफ्टवेयर सिक्योरिटी होती थी, लेकिन अब हार्डवेयर लेवल पर सिक्योरिटी चिप लगाई जाती है। इसे खासतौर पर रक्षा मंत्रालय, स्पेस ऑर्गेनाइजेशन, डीआरडीओ के सिस्टम्स में इस्तेमाल किया जाता है। दूसरी चिप मैट्रिक्स मल्टीप्लायर राधेश्याम शर्मा ने अपनी टीम में शामिल एमटेक की छात्रा कोमल गुप्ता और बीटेक छात्र सात्विक रेड्डी के साथ मिलकर तैयार की है। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक्सलेटर चिप है, जो आवाज पहचानने और कंप्यूटर ग्राफिक्स बनाने में मदद करती है। इंटरनेट के डाटा को सुरक्षित रखने में यह चिप उपयोगी है, इसलिए कई डिवाइस में इसे लगाया जाता है।

चिप तैयार करनेवाली आइआइटी इंदौर की टीम।

स्टूडेंट्स को मिलेगा एक्सपीरियंस

प्रो. एसके विश्वकर्मा बताते हैं कि इस चिप को तैयार करने में महंगे सॉफ्टवेयर की जरूरत होती है। एक चिप तैयार कर उसे फेब्रिकेट कराने में 30 से 40 लाख खर्च आता है। संस्थान इतने महंगे सॉफ्टवेयर खरीद नहीं पाते, जिससे विद्यार्थी चिप बनाना नहीं सीख पाते। आइआइटी इंदौर ने ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर से बिना खर्च चिप तैयार की है। इससे बीटेक-एमटेक के विद्यार्थियों को एक्सपीरियंस मिल सकेगा और संस्थाओं के भी लाखों रुपए खर्च नहीं होंगे। आइआइटी इंदौर चिप बनाने की ट्रेनिंग अन्य संस्थानों के विद्यार्थियों को भी देगा।